

महारामायण ॥

विशूचिका आख्यान

जिसमें

सर्वोपकारार्थ कर्कटीराक्षसी का आख्यान मन्त्रादि विधि सहित है जिसके पठन पाठन श्रवण इत्यादि से विशूचिका अर्थात् हैज़े इत्यादि का भयनहीं होता ॥

श्री पटिनी मल्ल की आज्ञानुसार भट्ट श्री कृष्ण बल्लभ पण्डित महाराज की संग्रह की हुई ॥

तीसरीबार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छापीगई
जूनाई सन् १८९३ ई० ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ महारामायण ॥

श्लोक ॥

गुरुंगिरीशंगणपंगोपतिंगिरिधारिणं ॥ प्रणम्यबाल बोधाय लिखामिसुखभाषिकम् १ भट्टश्रीयुतकृष्णबल्लभ सुधीधुर्य्येणसंलिख्यतेराजश्रीजितराजराजपटिनीमल्ल। र्य्यवर्याज्ञया॥ भाषाबलाविशेषबोधजननीवाशिष्ठरामाय ण प्रोक्तानलपविशूचिकाभिधमहोपाख्यानसंबंधिनी २॥

वशिष्ठजी रामजी सों कहें हैं हे रामजी ब्रह्मतत्त्व तो एकहीहै अज्ञानियों को अनेकरूप भासेहै यहबात आगे एक कर्कटीनाम राक्षसीने कही है जो एकहिमाचलपर्व्वत के पिछाड़ी देशमें कर्कटी नाम राक्षसीरहै सो वहबिशूचिकाकीकन्यारहै महाश्याम जाकोवर्णरहै बड़ी अन्याय की करनवाली सो एकही नग्न रहै महाडरपावनी रहै कुहरकोवस्त्रपहिरे श्यामवर्णवाकी लम्बीबाहें जाकी विन सों मानों सूर्य्यको पकरलेगी ऐसीदीखेंअन्धकारमेंफिरो करै बड़ोशरीर जाको क्षुधाहू वाको बड़ीरहै काहूतरे पेट भरेही नहीं जीभजाकी बड़वाग्निकीसी लहलहायोकरै सो वह एकदिन बिचारकरतभई जो मैं जम्बूद्वीपमेंजाय के अनेकमनुष्यों को निगलों तो मेरी यहभूंख कछुकसिराय जैसे समुद्र अनेक जलजंतुनको अपने पेटमें धरैहै और जैसे मेघकरके मृगतृष्णा सिरायहै तैसे यह मेरी

भूखहू बुझेपर यह बिचारभी कह्योहै जो ये संसारीजीव तपस्या मंत्र औषधी दान देवपूजादिकनसों सब अपनी रक्षाकरें हैं इनको कौन बाधा करिसके ताते होयनहोय तपस्याही मैं करों जो तपस्या सो सब दुर्ल्लभते दुर्ल्लभ सबनको मिलेहै ऐसे वह बिचारकरि सब जीवनके खाइबेकी इच्छा करि तपस्याके लिये कोई एक दुर्गमजगो को याद करतभई करिकेयाद वा पर्व्वत के ऊँचे शिखर पै चढ़ी बिजुली सरीकी जाकी आंखें चमकेहैं कारीमेघमाला सरीकी जाकीदेही चमकेहै तब वह वा पर्व्वतपैते आकाशकी राह स्नानकरबे को तपस्याकरबे को नीचे उतरी स्नानकीनी अब एकपांवसों ठाढ़ीभई चंद्रसूर्य्यसे निश्चल आंखेंकीनी ऐसे तपस्या करत भई अब वाके क्रमसों दिन पक्ष मास ऋतु वर्ष अनेकबीते जाड़ोगरमी कछू मानेनहीं पर्व्वत सरीकीकठोरभई मेघमाला सरीकी देही अपनी श्याम दिखावेहै ठाढ़े कारे जाके माथेकेबार बाहैं ऊंचीकरे मानो आकाश को पकड़हीलेगी ऐसीरही तब ब्रह्माजीने वाकोदेखी पवनसों सबअंग जाको जीर्ण होयरहो डुंकार न्यारोकरोहै माथेपर अंधकार न्यारोधरे है गहना ऐसे चमके है मानो आकाशके तारागणही हैं ऐसी वाको देखके ब्रह्माजी आवतभये॥

इतिश्रीमन्महारामायणेविशूचिकाप्रकरणेराक्षसी वर्णनंनामसर्ग्गः ६७॥

वशिष्ठजी कहते हैं अहो राम अब वा राक्षसी को तपस्याकरत हजार वर्ष बीते तब ब्रह्माजी आये वाकी दारुण तपस्या देख वाको वरदेबे को आगे आय ठाढ़े

भये वा राक्षसी ने ब्रह्माजीको देख मन करके नमस्कार करि यह बिचार कीनो जो मेरी या भूखके मेटबेको कहा उपाय होय परंतु एक उपाय है जो मैं गुप्तरूप सूचीरूप के सगरे जीवनके हृदयमें पैठके सब प्राणिन को ग्रसों तब क्रम सों मेरी यह भूखघटे ऐसे बिचार करनवारी वा राक्षसीको देख ब्रह्मा बोले अरी बेटी कर्कटी उठ मैं तोपै बहुत प्रसन्न भयों जो तोको चाहिये सो वर मांग मैं देऊँ यह ब्रह्माको वचन सुनि वह कर्कटी राक्षसी बोली बिना लोहेकी सूई अथवा लोहे कीही सूईसी होय मैं सब जीवन के हृदय में बैठों वशिष्ठजी कहते हैं यह सुनि ब्रह्मा कहत भये जा ऐसीही होयगी और तू या सृष्टि में विशूचिका होय सूक्ष्मरूप करिके सब जीवन को मारेगी जे प्राणी दुष्ट भोजन करेंगे दुष्टकार्य्य करें दुष्ट रहेहैं दुष्टदेश बासकरेंगे विनको तू मारेगी वाडुकीलकीर सरीको व्याधिरूप विशूचिका होयगी भले बुरे सब प्राणिन को मारेगी और गुणीकी चिकित्सा को यहमंत्रहै सो मैं कहूहूं॥ ॐ ह्रीं ह्रींह्रीं ऐं विष्णुशक्तयेनमः। भगवतिविष्णुशक्तेएनन्दहदह पचपचमथमथहनहन उत्सादयउत्सादयदूरेकुरुकुरुस्वाहा विशूचिकेक्रः क्रः क्रः हिमवंतंगच्छगच्छजीवसः सः सः चंद्रमंडलगतेस्वाहा॥ यहै महामंत्रहै यासों बायेंहाथमें न्यासकरि मार्ज्जनकरे फिर ध्यानकरे मानो हिमाचलके सामने कर्कटी राक्षसी दौड़ी चलीजातहै बड़ी क्रूरमंत्ररूप मुद्गरसों पिसीजातहै और रोगी मानो चन्द्ररसायनके दहमें बैठो है जरामृत्यु सों दूर है सबरोग व्याधिमुक्तहैं फिर साधक शुद्धहोय आ-

वमनकरि ऐसे सबरी बिशूचिकान को मार्जन करे ऐसे ब्रह्माजी वासों कहि वरदान देके आकाश की राह सब देवतानको दर्शन देत अपने ब्रह्मलोक को जातभये॥

इतिश्रीमनमहारामायणेवाशिष्ठेबिशूचिकोपाख्यानेसर्गः ६८॥

वशिष्ठजी कहें हे रामजी वह राक्षसीकर्कटी ब्रह्माके गये उपरान्त अपनो शरीर सूक्ष्मकरतभई जो पहिलेही वा बड़ेशरीरको वृक्षकीडारसरीको कीनो पीछे वाकोशरीर पुरुषके बरोबरभयो फिर हाथकेबरोबर फिर प्रादेश के बरोबर फिर अंगुरी के बरोबर फिर उर्दकीफरीबरोबर फिर सूईसो होगयो ऐसी लोहेकीसूई सरीको अपनोशरीरकरि वहराक्षसी बड़ीशोभा पावतभईही और रत्नकी सूईसीचीकनी लोहोतो दीखेनहीं और पैनीतोबड़ीअति सूक्ष्मरूप दिखाईदेतभई मुखसों मानोआकाशको ग्रसेगी आंखको सकोड़ि दीप को देखिये जब जैसे किरण छूटे तैसी दिखाईदेतहै कमल के डोरासरीकी ब्रह्मनाड़ीसी सुंदर जैनमत सरीकी दिखाईदेतभई अब यह ग्रसबे को चली कोईनजर न आयो तबचिन्ता करतभई और मैंने कहाबरमांगो या नन्हेरूपसों कैसे जगत्को निगलों बड़ी भूली में जो मैंने ऐसो बरमांगोआगो पीछो बिचारो नहींऐसेही में नन्हीहोय मरी ऐसे चिन्ताकरेहै तबहीं वा सूचीरूपसों लगोएकदूसरो रूपवाको वैसोहीसूक्ष्मबनो जैसो सूतको डोरा शूलीकीसी पीड़ाको करनवारो भयो ऐसीवह राक्षसी तलवारकीधारसी सूक्ष्मफूलकीलकीरसी पापीके मनोवृत्तिसी जीवनुके प्राणहरबेको सूईरूप

दोइशरीरबनायजीवनके हृदयमें प्रविष्टहोयसबकोबाधा देत दशोंदिशानको भ्रमतभई सांचहै सबहीअपनेकाम हलको भारी बनेही कर्कटीकोछोड़ भयानकशरीर सूची रूप कीनो सांचहै अल्पजीवन को थोरोसो कहूअर्थ चाहिबेलायकहोतहै सूचीरूप वृक्षरूप पिशाचीरूपतपस्या करिकीनो सांचहै पुण्यात्मन्कोभी शरीरबंधन छुटे नहीं पापिनकीकौनगिनती पीछे सूचीपिशाची वहभईदिशान में फिरतभई तब वाकीदेहीस्थूल पवनकेवेगसों विलाय गई शरदकालके बादरकीसी नाईं अब वहराक्षसीकाहू के शरीरमें प्रविष्टहोय वायुबिशूचिकाभई एकके शरीरमें प्रवृष्टहोय जीवके हननवारी विशूचिकाभई उसे वह बिशूचिका कहूं तो तृप्तभई कहूंकहूं मंत्रपुण्य औषधियोंके जोरसों नष्टहोयगई ऐसे वाकोफिरत अनेकवर्षबीते दोइ देहकरिके धरती आकाशमें फिरनलगी धरतीमें धूरिसों मिलीरही हाथ अंगुरी रूप करिरही आकाश में लाल बादलके रूपसों रही वस्त्रमें जीर्ण सूतके डोरा रूपकरि रही देहीनकेभीतर नसाजालमें धूरिपरागरूप करिरही नदीसरोवरनमें सूखीधरतीके रूपसों रही सूखीघासमें सूक्ष्मरेखाबनके रही अर्थहीनपुरुषमेंश्वासकेरूपसोंरही बड़ेमोटेहाड़के शरीरमें कांपनेकेरूपसोंरही अचेतजीवमें आहार शून्यरूप करिरही कंपायमान शरीरमें रुखाईके रूपसोंरही ऐसे कहांताईं कहें अनेक रूपकरिके अनेक नगरमें फिरतभई ऐसे जहां तहां जावाआई करत हार पड़ी कहूं एकजगे बिश्रामकरबे के लिये गिरपरी सबशरीर वाकोबिखरगयो फिर वहसूची अपनीभीतरलीसत्ता

सों उठिके फिरतभई जैसे वायुकेबेगसों सूखीघास उड़े तैसेदिशा बिदिशानमेंफिरतभई दूसरेके पूर्णकरबेकेलिये चेष्टा आपनी करेहै जैसे पुराने जीर्णकपड़ा को पूर्णसूई करे यहां यहीदृष्टांतजानिये अब यहराक्षसी अपनेक्षीण पूर्ण जो रूप बढ़ोदेखो तब भीतर बहुत संताप सों करत भईप्राणिनकेअंगमेंसूक्ष्मबेधकरतजातहै जैसेसूईकपड़ा के बीच और प्राणियोंके बीच घुसके सूई जैसे कपड़ाके बीचमें सूत पोहतजाय तैसे आप पैठतभई और तनक संचारकरत घोड़ा जैसे खुरी तैसे बाधाकरतभई सहज अपनेरूपसों खेद उपजावतहै सांचयहां सूईको दृष्टांतहै जो वहसूई जैसे वस्त्रमें दीर्घ डोराको ब्याप्त करे तैसेही बिशूचिका प्राणियोंके हृदयमें बाधाकरे आंखनको अपने संचार सों बिदीर्ण करे सांच जे मर्मबेधी दुर्जन तिनको यही स्वभावहै और कंधेनमें कपड़ासी मालूमपड़े जाके देह में बेधकरे ताको मुख देखके ऐसे बिचार करे याको कैसे मारौं यह मारनो मोको अच्छो लगेहै शरीरमें रेशमी कपड़ा सरीकी लगे भले बुरे को देखेनहीं सांच जड़न को यही स्वभाव होयहै और फिर वह बिशूचिका सूईसी सांची भई जो जैसे सूई कपड़ाके बीच डोरा को डारे अंगुरी सों दबीरहे पैने मुख सों चिकने कपड़ा में घुसत चलीजाय तैसेही यंह विशूचिका ब्रह्माके बरदान सों जीवनको बाधा करतभई और मुखमें गर्द भी नहीं सब तरेरुकी और बुद्धि नहीं पर पैनी बड़ी हृदय नहीं सबनके बीच बिंधी राजाकी बेटी कहावै और अभागिनी बिना बिगाड़ सबसों लड़ाई चाहे कनन को

बेधकरे याहीते सूचींकहावे कबहूँ प्राणीको सुवाके ऐसो करे जैसो सूने बनमें मानो पड़ो बनको वाने अपनोमित्र कीनो सांच अपने लायक मित्र सबकोई चाहे है मूर्खमूर्खनसों मित्राईकरे बड़ोसुखमानेहै और शरीरमें सूईसी गाड़े जैसे लुहार कोई लोहेको शस्त्रबनावे वामें जैसे छोटे छोटेचोभागाड़े तैसेजीवकीशक्तिहरे अपनीदुःखकीशक्ति को प्रकटकरे और टूड़ीमें जोसमाननामा प्राणरहे वाको उलटोकरे उदाननामा गरेमें जो प्राणरहे हैं ब्यान नामा सर्वशरीर में रहै इनको उलटेकरे हृदयमें कंठमें शूलउपजावे प्राणीको उछाले रंगफेरदे मतवारो करे बहुत करि हृदय सूईसीचले जैसे दरजीके हाथकीसूई कपड़ामेंचले और पाइने पेटरुधिर सुखावे ऐसे प्राणिनको पीड़ा देत अपने मनमें बहुतहृतहोतभई सांच दुष्टनको दुःखदेनेमें बड़ो उत्सवहोयहे कौड़ीमात्र द्रब्य सूमनको बहुत प्यारो लगेहै प्राणियों को अपनो अहंकार छोड़ो नहीं जाय है दोइकौड़ीकेलिये परायोपेटचीरे जैसे दुष्टजन तैसे ग्रहबिशूचिका थोरेसे अपनेसुखकेलिये अनेक प्राणीनके प्राण हरनलगी और जैसे सूई कपड़ा में डोराको परोहके जो धरीरहे तो मैलीहोय नित्यनित्यचले तो उजरीरहे ऐसेही यह बिशूचिका सबनके शरीरमें अनेक ब्याधि उपजावे तब निर्म्मलरहे नहीं तो बड़ोदुःख माने ऐसी वह बिशूचिका जीवनको मारत अपने मनमें बड़ो संतोषमानत भई सांच दुर्जनमनुष्य परायेदुःखमें आपबड़ो सुखमाने दुर्जनको यह स्वभावहीहै यापै एकसाधारणबातकहै हैं वशिष्ठजी यह बिशूचिकाको जो वर्णन हमने कियो राम

जैसों यह ब्रह्मकीही सबसत्ता जानो वह सत्ता चाहै सो करै कीचमें बूड़े आकाश में चले दिशा बिदिशा पवन पानी धरती राह घर बन सबजगह बिशूचिकारूप होय हाथमें कान में हृदय में नेत्रमें पीड़ाकरै ऐसी ब्रह्मसत्ता जानिये बाल्मीकिजी कहै हैं इतनी कथा कह वशिष्ठजी थँभे तबहीं तो सूर्य अस्तहोतभयो वशिष्ठजी सायंसंध्या करके उठे तब रामजी की सबही सभा उठी फिर सबेरे सूर्य्यकेसाथ सभाजुड़ी जैसे सूर्यनिकसो तैसेहीसबसभा लोक आवतभये ॥

इति महारामायणे योगवाशिष्ठेसूचीव्यवहारवर्णनं सर्गः ६६ । ३ ॥

वशिष्ठजी कहै हैं याकेपीछे वह कर्कटीराक्षसी बहुत समय बीते सबरे मनुष्यनके मांससों तृप्तिभई पहिलेही दिनमें तृप्तिहोगई फिर बिचारी जो मैं सूचीभई या मेरे रूपसों थोड़ोहीमांस खायबेमें आवेहै हाय मैंने कहाकाम कीनो जो अपनोछोटो रूपकीनो बड़ोरूप मेरोहोतो तो बहुतमांसखाती देखो यहमांस तो बहुतमें छोटीसी कहां-ताईखाऊं मनुष्यनकोलोहू बहुतमीठो कहाकरूं धरतीमें लोटूं कीचमेंडूबूं हायमैंमरी अनेक मनुष्यनके पायँनसों मैं खूंदी हाय मेरेकोई नाथ नहीं मैं अनाथ मरी मेरे दुःखमें दुःखपड़ो मेरेको सहेली नहीं दासी नहीं न मा न पिता न कोईसगो सहोदरोभाई बेटाकोईनहीं मेरेदेहीको आसरो नहीं कहूं ठिकानो नहीं कहा करूं भटकत २ हारपड़ी आपत्तिके कुँवामेंपड़ी कोई मेरो निकासनहारो नहीं नाश मेरो भयोजात है मैंने अपनो शरीर छू छोड़ो कैसी बुद्धि

कीनी मैंने जो कांचकीमणि कीच मेंतें काढ़िलीनो और हाथ मेंते चिन्तामणि कीचमेंडारो ऐसीकुबुद्धिकीनी मेरो मन मूर्च्छाखायहै पराई लौंड़ी पराईचाकर मैं भई महा-दयावनी परवशभई अब चाकरीकरूं पर वह जीवनके छेदबेकी इच्छा मेरी दुःखदायिनीभई मैं बड़ीअभागिनी अभागही मेरो खुलो हायमैं आंधरी होगई वह पहिलो अपनो बड़ो शरीर योहीं छोड़दीनो जैसे मेरो नाश होय तैसी बुद्धिभई मैं मच्छरसरीखीभई धूरि में मिलरही अब कौन मेरोउद्धार करैगो तपस्वी ज्ञानीनको ऐसी बुद्धिक-बहूं नहीं होयहै अब मेरोउद्धार कब कैसे होयगो सांच उसे पटवीजनाके पास जानवारेको तनकुहू उजेरो नहीं होय तैसीअवस्था मेरी होयरहीहै अबयह आपत्ति मेरी कबताई रहेगी जोमैं तड़ाग गढ़ेलामें पड़ी लोटूहूं कबमैं वैसेही पहाड़सरीखो शरीरपाऊंगी जैसे कछु मेरापहिले राक्षसीको शरीरहो सोई जो मेरोबनजाय तो मेरेमनको चैनहोय जो वैसो बडोशरीर मेरोहोय तो पहाड़नकेऊपर फिरूं विहारकरूं रुधिरमांस मज्जाखाऊं कबहूं ताती२ लोहूपीऊं सुखसोंसोऊं यह सूचीशरीर मैंने योहीं निक-म्मोकीनो कहां मेरो बड़ोसोशरीर कहां छोटो सो सूईको शरीर मैंने तो सब अपनो सर्व्वस्व खोयो जो पहिलेमैं पहाड़सीथी अब मुसियासरीखी भई हाय वह मेरोपेट बिन्ध्याचलकी गुफासरीखो कहांगयो वेमेरीबाहें पर्वतके शिखर सरीखी नष्टभई वे आंखें वे गहना वे बड़े२ कंधे वेमेरेपायँ सबअंगमेरो नष्टभयो कहाकरूं कहांजाऊंबड़ो दुःखमेरेपड़ो जो मैं सूईभई माखीके पायँसों चलायमान

होतहूं हाय मेरोवह काजरकोपहाड़सरीखो शरीर कहाँ गयो यह तुच्छ सूचीको शरीरभयो यह छोटो सो मेरो मुंह भयो अब मैं मांस कैसेंखाऊं मैंमरी मैंने अपने नाशकरने की यह चेष्टाकीनी ऐसे वह राक्षसी कर्कटी बहुत चिन्ता करतभई॥

इतिमहारामायणेयोगबाशिष्ठेबिशूचिकोपाख्यानेबिशूचिका बिलापेसर्गः ७०।४॥

वशिष्ठजोरामजीसोंकहैहैंहेरामजीवहसूची ऐसेबहुत बिलापकरि बिचारकरतभईजोमैं फिरतपस्याकरूंतोवह अपनो पहिलेकासाबड़ोराक्षसीकोशरीरपाऊं ऐसेबिचार करसूचीजीवनकोमारनोछोड़वही हिमाचलपर्ब्बतकेशि-खरमें जायतपस्याकरतभई अपनोआपही सूचीरूपको देखतजातिहै प्राणवायुरूपहोय जीवनकोमारतभई फिर वा हिमाचलमें बड़ीदोईलगी देखतभई वा दोईमें जाय ठाढ़ी भई एकपायँसों जैसे माड़वारमें कोई सूखीघास सरीखीफिरतपस्या बड़ीकरतभईउपरोकोमुखअपनोकर लीनो कारी हिंसा करनवारी एकसांपिनी को देखी वा सांपिन ने अपनोमुंह ऊंचोकरि याके पास आई याकी सहेली सी बनगई सांच खोटे आदिमीको खोटोहीमित्र मिलेहै फिर सूचीको सूर्य्यकी तीखी किरण आगे सहेली दूसरीभई सूचीने अपनीआंखें सिकोरलीनीऐसेतपस्या करनवारी वा सूचीकोदेखसबने जाइवाकी चाहनाकीनी बायुने हूं देख बड़ी चाहना कीनी ऐसेवह सूचीअचल होय तपस्या करतभई कांपनो जाने छोड़ दीनो अपने वाही पहिले शरीरकीचाहनाकरी ऐसेवहसूची हजारबर्ष

की तपस्याकीनी चौथेलोकनको संताप करत जात है तपस्याकी अग्निकरके भयानक देहीधारणकरेहैं वाकी तपस्या की अग्निसों,हिंमाचल तपन लगो तब इन्द्रने देख विचारकीनो यहतपस्याकौनकीहैं जासोंसब जगत् तपरहोहै यहविचाारकरि नारदसोंइंद्रपूछतभयोहेनारद जी सूचीने सातहज़ारबर्ष ताईं तपस्याकीनी तासोंसब जगत् तपउठो सांप श्वासलेहै फुंकारभरेहै पर्ब्बतजरके टूटकेपड़ेहैं देवताभाजेहैं समुद्रउमड़ेहैं दिशाभुरसेहैंमैली भई जातहै यहकहा.तब नारदकहनलगे इन्द्र देख यह सूचीकी तपस्याको बहुत प्रताप बाढ़गो यह सूची क्षय को प्राप्त होयहै जगतहू उजरो जातहै ऐसे नारद इन्द्र सों कहत भयो ॥

इतिमहारामायणेयोगबाशिष्ठेसूचीउपाख्या-
नेसर्गः ७१ । ५०॥

फिर बशिष्ठजीकहैहैं हेरामजीसुनो इंद्रनेकर्कटीराक्षसी को यहदुष्ट वृत्तांतसुना-नारदसों फिरहूपूछतभयो-नारद जी कहो वा कर्कटी राक्षसीने हिमाचलके शृंगमेंतपस्या करि सूची सूक्ष्म पिशाची बन कौनकौन भोग भोगे सो कहो तब नारदबोले कर्कटीसूची लोहेकी सुई सरीखी बन जीवनको प्राणघात करतिभई राक्षसी फिर सुईको आसरो छोड़ि बायुरूप होय प्राणीन के प्राणबायुद्वारा नसनसमें घुसके मनुष्यनके मांस रुधिरको खातपीवत भईशूलकीपीड़ा नसनमें करतभई और अनेकतरहकी पीड़ा करतभई मनुष्यमांस बहुतखाये बलचेष्टा सों कि-लोल करतभई अनेक बननमें पुष्पनकी सुगंधि सूंघी

पर्वतनके शिखरनमें विहार करतभई अनेक मनुष्यनके मांस काटि के खाये जैसे तरवारस्त्रदेहीन की नाड़ीन में घुसे दिशा विदिशानमें जाय प्राणीनके शरीरमेंजाय दीपककी ज्योतिसी दिखाई देनलगी अनेक प्राणखाये लोहूपियो पवन सरीखी उड़ीजात दिखाईदे वा सूचीने छिपे२ सब प्राणीनके मांस व रुधिरपिये जैसे नदी न में लहर उठे तैसेजविनके शरीरमेंतरंग उठावतभईऐसे मेद मांस तो बहुत सों देखोआपछोटी और तृष्णाबड़ी करे खाइ न सकी और मनुष्यनको रुधिरमांस बहुत खायो और गधाऊंट हरिण हाथीघोड़ा सिंहनकेभी हृदय मेंपैठ यानेलोहूपियो भोग भोगो विलासकीनो नृत्यकीनो गीतगाये वास कीनो अनेक प्राणीनके देहनकेसाथ दिखाईदेत नहीं शरीरतो जाकेहै पवनरूप आकाशरूप नहींसे हांसो शरीरकहावेहै अनेक प्राणीनके हृदयमांस रुधिर पानकरि मतवारी होयरहीनईपकड़ी हथिनीसरीखीहोय नदीनमें न्यारे किलोल करतभई बाहर भीतर के पवनरूपहोय सबजगह जातभई गंधरूपहोय पुष्पन में पैठी कहूं२ मंत्रओषधीनके बलसो नष्टकरदीनी ऐसे वह सूची यत्नकरती फिरती मनको संताप न शरीरको संतोष पावत भई अधर्मिणि धर्मात्मनको सतावेहैअब वह पहिले संतप्त शरीरकी यादकरतिभई बड़ीदुःखित भई अपनेपेटको भरोचाहेहै तबवाने यह बिचारकीनो जो जैसे पहिलो मेरोशरीरमोको मिले यहसूचीकोशरीर जाय वैसेही तपस्याकहूंमें करूं ऐसेमनमें बिचार करत भई फिर आकाशमें एकगीध उडोजात देखो वाहीके

पेटमें पैठगई सोवहगीध वा सूचीकोलिये काहूदिशाको उड़िकर जो पहाड़ वा सूचीनेचाहा तहांहीं लेजातभयो अंजनारएय नाम पहाड़ ताके बीच एकबांसनके भुंडमें डारदेतभयो सो वहसूची वा पहाड़के शृंगमें जरी वा गीधने देवता सरीखी सोही फिरवाही जगह एकपांयसों ठाढ़ीहोय तपस्या करतभई वा गीधके प्राणनमेंसेबाहर निकसकरि पड़ी वा दिनते वह सूची बड़ी तपस्विनीबनी नारद इन्द्रसों कहेंहैं अहो इन्द्र ऐसे वा सूचीकोबहुतबर्ष बीते अब तुम वापै दया करि बर देनेको यत्न करो वह जंगल में अकेलीपड़ी तपस्या करेहैजो वाको बर न देउगे तो वह तपस्याके तेज सों जगत्कोजराइ देगी बशिष्ठजी कहैंहैं हे राम इन्द्र यह नारद के मुख सोंसुनि सूचीके देखबेको पवनको दिशानमें भेजत भयो तब बायु सूचीके देखबेकोचली आकाशकीराहउतर जहांतहां बायु फिरतभयो सातों समुद्रदेखो लोकालोक पर्बतदेखो शुद्धोदक समुद्र देखो पुष्करद्वीप देखो सुरा समुद्र गोमेधद्वीप देखो इक्षुरससमुद्र क्रौंचद्वीप क्षीरसागर श्वेतद्वीप घृतसमुद्र कुशद्वीप दधिसमुद्र देखो जम्बूद्वीपदेखो सुमेरु देखो ऐसेही सबजगह फिरत२ बायुवहां आये जहां सूची हिमाचलके शिखर में तपस्याकरे तहां आय वा सूचीको देखतभयो जो सूची इंद्रधनुषसीलम्ब होयरहीहो घासकेपुंजमें दावानललगी तामेंबैठीतपस्या करे ऐसीसूचीको देखि पवन बिश्राम करतभयो ॥

इतिमहारामायणेयोगबाशिष्ठेसूचीउपाख्यानेसूचीतपोबर्णने सर्गः ७२। ६॥

वशिष्ठजी कहे हैं अहोराम ता पीछे वहपवन जायके हिमाचल के शिखर में तपस्या करत ऐसी जो वहसूची ताकोदेखो कैसीहै सूची एकपाँयसों ठाढ़ीहै शुष्कजाको शरीरहै भोजनजाने छोड़दीनोहै पवनखायहै मुखपसारे हैं सूर्यकी किरणनसों सूखरहीहै ऐसी वह सूचीको देख पवनबोलतभयो अरीतपस्विनिसूची ऐसीकठिनतपस्या क्योंकरेहै इतनी बातही पवनकहिसक्यो आगे सामर्थ्य ठाढ़ेहूरहनेकी न भई वाकेतेजकरि जरनलगो हार आकाशकोही वायुचलोगयो आकाशमार्गमें सप्तवातस्कन्द को उल्लंघि सूर्य चन्द्रमाके मंडलको उल्लंघि इन्द्रकेपास पहुंचो इन्द्रनेहू वा वायुको आयो देखि उठकरि मिलत भयो यहकही कहुपवन तू सूचीकेदर्शनसों बड़ोपुण्यात्मा भयो वहांके समाचारकहु यहसुनि पवन सगरी सभाके सोहीं इन्द्रसों कहत भयो इन्द्र जम्बूद्वीप में हिमाचल नाम पर्वतहै वाके उत्तरशिखरमें सूची तपस्याकरेहै कहां ताईं वाकी तपस्या को वर्णनकरूं बड़ी घोर तपस्या वह करे वाने अपनी तपस्याकेतेजसों वह सब पहाड़ तपाइ दीनोहै कोई वहांजाइनहींसको और सब जगत्को वह सूची जरावेगी तासों याको उपाय सितावी करो उठो चलो ब्रह्माकेपास वे याको जो इलाजकरें सोसही ऐसी पवन की बातसुनि इन्द्रादिक देवता ब्रह्मसभा में ब्रह्मा के पास पहुँचे सब वृत्तान्त सूचीको कहो तब ब्रह्माकहो अहोदेवता यहमें चलो वा सूचीके बरदेने को सो वाको वरदानदेय तपस्या सों निवृत्त करोंगो तुम चिन्तामति करो यहसुनि इन्द्र अपनेघर आवतभयो इतनी वा सूची

की बड़ी बड़ाई भई तपस्या बहुतही बढ़ी बड़ी जीवन्मुक्ति सीही होयगई कहांताई वर्णनकरें॥

इतिमहारामायणेयोगवाशिष्ठेसूचीउपाख्यानेसूचीतपोवर्णनेसर्गः ७३। ७॥

वशिष्ठजी कहैंहैं तदुपरांत हज़ारवर्ष पीछे ब्रह्मा जी वा सूचीकेपासआय वचन कहतभये अरीबेटी जो तोको चाहिये सो मांग मैं ब्रह्मा तोको वरदेवेको आयोहों ऐसे जब ब्रह्मा कहनलगे तब वह सूची महानन्दे रूप सों वर्त्तमान जैसे बुझे आंच की उष्णहोय तैसी सूक्ष्म जीव कालारूप कछुबोल न सकी फिर मनमें विचारी कहावर मांगोमेरेतोकाहू बातकी कमीनहीं ऐसेहीसदाशांतसुखित में रहों ऐसोसुख मोको दीजिये मैं अपने ज्ञानसों पूर्णहों जैसी मैं बैठी हों तैसीही मैं यहांहीं बैठीरहों और मोको कछु नहीं चाहिये है इतने दिनताईं मोको पहिले बड़ो अज्ञानहो अबमैं उपशांतचित्त भई भले बुरे कछु पदार्थ मोकोचाहिये नहीं इतनाकहि वहसूची चुपहोगई तब ब्रह्मा वाको चुपदेख बोले अरी बेटी मैं तोपै बहुत प्रसन्न भयों वरमांग कहादेऊं तोको कछुदिन या संसारमें भोग सुखभोग पीछे ब्रह्मरूपमेंजाय मिलेगी तेरी यहतपस्या कोफल खाली न पड़ेगो और तेरो जो यह सूक्ष्म रूपहै सो यह तेरेदेखत २ बढ़िजायगो पहिलेकीसी नहीं पहिलेोही बड़ो राक्षसी कर्कटीको शरीर होयजायगो तूभी ध्यानकरत सदा यहांहीं बैठी रहियो जब भूखलगे तब पापिनको देख २ खाइयोयामें तोकोदोष कछू न होयगो यातरे तू न्यायवृत्ति अन्यायबाधिकाहोयगी जीवन्मुक्ति

होय कृतार्थहोयगी यहकहि ब्रह्माजी अपने ब्रह्मलोकको जातभये अब वा सूची को शरीर नन्हों हो पर ब्रह्मा के वरदानसों बढ़नेलगो क्रमसोंबढ्यो जो जैसे वड़के बीज में बटको वृक्षरहै तैसेहीबढ्यो पहिले तो प्रादेश अंगूठा, तर्जनी अंगुलीकी अन्तराय बरोबर पीछे वृक्षकी डार बरोबर पीछेवृक्ष की बरोबर ऐसेही बढ़त २ ज्योंका त्यों पहिलोहीं काजर को पर्वतसरीखो भयानक राक्षसी को शरीर होयगयो ॥

इतिमहारामायणेयोगवाशिष्ठेसूचीउपाख्याने सर्गः ७४ । ८ ॥

वशिष्ठजी कहै हैं वासेपीछे वहसूची ज्योंकी त्यों कर्कटी राक्षसी होयगई वहांहीं बैठी ध्यानकरतभई अचलहोय के ऐसे ध्यानकरत वाको छः महीनाबीते प्राणायामकरत छः महीना पीछे जागी तब वाको भूखलगी जो देहको स्वभावमिटै नहीं है तब वह चिन्ताकरत भई कहा खाऊं कैसेमेरी भूखमिटै भोजन तो न्यायको करनो अन्याय भोजन तो करनो मोको योग्य नहीं ताते न खानो और मरणो कबूलहै और जो शरीर छोड़ों तो यहू अन्याय है अन्याय भोजन तो करनो अच्छो नहीं जो विषकी बरोबर हो है लोककी रीति को भोजन अच्छो कहावे है मरन वा जीवन कछू मोको अच्छो नहीं दीखे है दिनरात मोको मोहही केवल है ताते देह बुद्धि छोड़ शांतहोयरहूं वशिष्ठजी कहै हैं वह सूची यह कहिके चुप होयरही इतने में आकाशमें वाणीसुनी राक्षसी स्वभाव जो वानेछोड़ो तासूं पवनप्रसन्नहोय कहतभयो अरी क-

र्कटी तू मर्खनको ज्ञानोपदेश करु सितावी जो मूर्खनको ज्ञानदेनेमेंबड़ोपुण्यहै जोतेरोसम भायो न समझेगोवा-को तू भक्षण करियो थामेंअन्याय पाप तोको कछू न होयगो यहसुनि सूची बहुतराजीभई वाहीबिरियां वा पर्व-तके शिखरसों उतरी ऊपरते नीचेआई वहां सों चली किरातन के देशमेंआई जहां २ अन्न पशुलोक बहुत हैं याको भोजन बहुत मिले अन्न फूल फल हरिण पशु पक्षी बहुतदेखे फिरि महाश्यामवर्ण वहसूची हिमाचल शिखर की तरहटी में किरातदेशमें गाढ़ा अँधेरेकी रात में प्रविष्ट होय अँधेरीरात के बीचबाजारमें चली॥

इतिमहारामायणेयोगवाशिष्ठेसूचीउपाख्यानेसर्गः ७५। ९॥

वशिष्ठमुनि कहै हैं वाही समय में किरात नगर में अँधेरी रातभई गाढ़ो जामें अँधेरो चन्द्रमा नक्षत्र कछू नहीं तामें मन्द २ चलनोबने तामें सूची अपनी राक्ष-सिनको संग लेकर चलतभई अन्तःपुरमें स्त्रीनके भूष-णके शब्दको सुने बनमें उल्लू बोलै हैं चोरनको संचार न्यारो होतजातहै अपने २ घरमें नायक अपनीसुंदरि-नके साथ शयन करै हैं राति वह कैसी दीखे है मानो काजर को समुद्रही उमड़ो मानो कांच को पर्व्वतही उठो आवैहै तरवार सों भी न कटै ऐसो अँधेरो जामें न्यारो दीखैहै अज्ञानकी नींद जहां बड़ी बढ़रहीहै ऐसी राति में वही बिरियां सब नगरके सोवत वह किरात भीलनको राजा वाको मंत्री दीवान ये दोऊ नगर की चौकसीं करबेको निकसे तब जंगलमें वे दोउनको कर्कटी राक्षसी देखत भई अब विचार करतभई आज मोको

बहुत सो भोजन मिलो ये मूर्खदोऊ हकनाहक मरिबेको आये जो मरणहारिहोहैं वाकी बुद्धि औरही होय जाय है जाको पाप उदितहोयहै सो मरणपावे है यह ब्रह्माने अनादि मर्यादा सृष्टि आरम्भ सों करि राखी है ताते मैं आज इनको भक्षणकरूंगी ये भोजन मोको मिलेहैं पर एकबात को विचारहै जो येगुणवान् श्रेष्ठपुरुष होयँ तो इनके भक्षण करबेमें बड़ोपाप मोको लगेगो मोको यह अच्छो नहींलगे जो गुणीपुरुषको मारनो तासूंदेखूं इन की मैं परीक्षा करों ये गुणी हैं वा निर्गुणी पापी वा पुण्यात्मा कैसे इन्हें परख तो लेऊँ पीछे जैसीहोयगी तैसी करोंगी ऐसो है विचार गुणीपुरुषको तो सर्वथासन्मा-नहीं करनो भलोहोहै वासों बिगाड़ करनो भलो नहीं जो ये गुणीभये मैं इनको न खाऊंगी और भक्ष्य मोको न मिलेगो तो मेरो मरण होयगो तो होउ यह अच्छो जो धर्म्म तो पलैगो पापकरि जीवने सों तो मरणोही भलो जो गुणवान्केसंगसों मृत्युहूअपनोमित्रहोयजायहै ताते होय न होय मैं इनकोपरखूं तो सही कैसेहैं गुणी वाअव-गुणीदेखूं कैसेहैं इनसों प्रश्नकरोंहूं कछूबातपूछूहूं जो ये कैसेउत्तरदेंगे जो इनपै उत्तर मोकोदेनो न आवेगो तो मैं इनहिं अवश्य भोजनकरूंगी.यामें संदेह नहीं वशिष्ठजी कहैहैं अहोराम वहकर्कटी सूचीराक्षसी यह बिचार करि चुपहोयगई ॥

इतिमहारामायणेयोगवाशिष्ठेसूच्युपाख्याने
सर्गः ७६ । १० ॥

वशिष्ठजीकहैहैं वाकेउपरान्त वहराक्षसी राक्षसकुल

कीमंजरीअंधकारमें मेघपंक्तिकीसीनाईं गहरोशब्दकरत भई नादकोकरि कठोर यहबच्चन बोली जैसे गर्जके मेह ओलानकोडारे तैसे कठोरबचन बोलतभई अरे अरे या घोरबनमें चन्द्रमा सूर्य्यसरीखे तुम दोनों कौनहो कीड़ा सरीखे मरबेको आये हो अपनेमनमेंतोतुमबड़ेबुद्धिमान् कहाहो पर हो बड़ेकुबुद्धी हाय कहाकरों मेरेमोहडेमें पड़े जीविते न बचोगे ऐसे जब राक्षसी कहतभई तापीछेतब यह राजा बोले अरे अरे भूत तू कौन है कहांरहे अपनो शरीर दिखाव तेरे या डरपावने बातसों हम डरनहारे नहींहैं मतलबीको सब कठिनभीकाम आयपड़ेपै करनो हीपड़ेहै तू हमको कहाबोलीसूं डरपावेहै तो सरीखेसिंह वान् पुरुष नष्टहोयजाहैं इतनीबात राजाने कही ताको सुनि वहराक्षसीने मनमें यहकही जो याने अच्छीठीक बातकही इतनो बिचारकरि अबअपनो शरीरके दिखा-यबेकेलिये और डरपायबेकेलिये फिरहूं गाजतभई और खिल खिलायके हँसतभईतबतो वहराजा और मंत्रीइन दोनोंने वह राक्षसीदेखी जो अट्टाट्टहासकरेहै और कैसी हैमानो प्रलयकालकी बिजुलीही कड़केहै मानो कालरा-त्रिहीहै श्याम अतिडरपावनो जाको शरीरहै भयानक जाकी आंखेंहैं नांगीहै कपड़ाहू नहींओढ़े पहरेहै अंगारे वाको उछालतजात है अनेक रूख जाने अपनी दौड़के झपेटसूं तोड़े हैं ऐसीही सामनेचली आवेहै ऐसीको उन राजामंत्रिनने देखी देखिकै वे डरपेनहीं बड़ो धीर्य्यपकर के जहांकेतहां ठाढ़ेहोयगये फिर उनमेंसे मंत्रीबोलोअरी महाराक्षसी यहजोरे हमारे ऊपर तू कहाकरे है. हमैं या

सूं हँसीआवे अथवा सांचहे तुच्छआदमी लुगाईबोदीन पे बडो जोरोकरे है धीर शूरनके आगे भाजे है हमारे आगे तू सरीखी हजारन माखी कहा करिसके हैं हम तोको ऐसीही मींजडारेंगे तातें तू यह आटोपसंभ्रमअपनोछोंड़दे गरीबीपकरि हमारे पास आव जो सबकछू गरीबी मुलाइमी सों मिलेहै जो जोरो हमेंदिखावेगीतो हम याहीक्षण तोहिं मारडारेंगे यह राक्षसी सुनि फिर मनमें बिचारकरी जो देखों कैसे शूर पराक्रमी ये पुरुष अहो बड़ो आश्चर्य्य है जो मोसों भी डरे नहीं सहजके नहींहै येकोईबड़े आदमी ज्ञानी हैं जोबोलीसों सूरतसों नजर सों आदमी शूरकातर कैसोभीहो पहिचानो जात है इनने मेरीबातजानी मैंने इनके मनकीबातजानीअब मोतो इनको न मारूंगी जोये अबिनाशी अबहींअमरहैं और ज्ञानीबड़े दीखेहैं होयनहोय कछुसंदेहनकी बात पूछो जोये वा बातको उत्तरदेंगे तोमें इनको मारोंगी नहीं और जो इनपे उत्तर न आवेंतोमें इनकोखाऊंगी यामें संदेह नहीं ऐसे वहराक्षसी बिचारकरि उनसों पूछत भई अरे तुम कौनहो कहा तुमारो नाम कहाजाति कहा बास कहां यहां जंगल में रातिकी बिरियांआये हो शूरबीर बड़े दीखोहो तुम्हें देख मेरेमन में दयाभई जो तुमको मारूं नहीं मित्रता करो चाहूहूं यहसुनिराजा को मंत्री बोलो सुनि राक्षसी जो यह मेरे संगहै सोभीलनको राजाहै मैं याको दीवानहों सब राज्यकार्य्यकर्त्ता या नगरकी रक्षा करबेको हम दोऊ निकसेहैं जो राजन को यहीधर्महै दिनरात्रि दुष्टनको दण्ड देनो धर्मात्मन

की रक्षाकरनी यहसुनि राक्षसीबोली अरेतूही या राजा केहां खोटो दुर्बुद्धि मंत्री है जो राजाको नाश करवाओ चाहेहै जो मंत्रीको यह चाहिये जो राजा कुधर्मकी शिक्षाकरे भलीबात सिखावे.तू अपकारी राजाको बिगाड़े है आप बिगड़रह्योहै जो राजाको भलीबातनकहे वह मंत्रीकहा जो सुनेमाने नहीं वहराजा कहातुम बहुतभले ज्ञानी आदमी दिखाई देतेहो जो मैं तुमसे कछूपूछोहों वाको जो उत्तरदेउगे तोमेरे पासते बचोगे नहींतो मारे जावगे अरे राजा अरेमंत्री मेरे ये प्रश्न हैं इनके उत्तरकी मोको बहुतदिनसा चाहलगिरही है अब तुम मेरी चाहनाकोमेटो जो अंगीकारकरि कार्यकरे वाकोकबहूं बिनाश नहीं होतहै ॥

इतिश्रीमहारामायणेयोगवाशिष्ठेसूचीउपाख्याने
राक्षसीविचारसर्गः ७७। ११॥

और वशिष्ठ कहै हैं अहो राम वहराक्षसी इननोकहि करि प्रश्न करबे को आरंभकरतभई जबराजानेकही पूछ पूछ कौनकौन तेरेप्रश्नहैं तबकहतभई वशिष्ठकहैहैं रामजीउनप्रश्नको तुमसुनो अब राक्षसीकहै है अनगिन्तीन एक नघनी समुद्र सरीखी कौनसी बस्तुहै जाके बीच अनेक लाखनब्रह्माण्ड रहेआवैहैं १ औरकौनवस्तुशून्य आकाशसरीखीहै जो वस्तुहै ऐसा कहावे नहींहै ऐसाकहावे सो कहाहै २ मैंकौनहूं तूकौनहै कौनचलहै औरनचलेहै और कौननहींठहरेरहै चेतनअचेतनकौनहै आकाश में चित्रको लिखनवारोकौनहै जोवस्तुअग्निहै और जरावेनहीं सोकौनहै कौनसोबिनाअग्नि, अग्निउपजेकौन.

सूर्यचंद्रमा अग्नितपस्याबिनारहे सबकोनाशकरे बिना आंखिदेखे बिनाकानसुने बिनाहाथ वस्तुको पकरे बिना पांयसबसों आगेदौड़े और स्थावरजंगम लताबेल रूख मनुष्यलाखनजीवनकों उजेरोकरनवारो कौनहै आकाशादिकनको उपजावनहारो कौनहै संतापकौनहै स्वभाव कौनने बनायो है जगत्को रक्षक कौन नाशक कौन जो वस्तुनहनी है जगत्को अपनेबीचराखे सबको उजेरोकरे अस्ति नास्ति कहावे नजदीक रहे दूरते दूरभी रहेक्षण पल घटीऐसे अनेकरूप कालकहावे आंखनको दिखाई दे नहूदिखाई दे प्रत्यक्ष कहावे चेतन अचेतन कहावे सर्बरूपहोय यत्नसोंन मिले सब जीवन को जियावेसूक्ष्म ते अतिसूक्ष्मरूपरहे सबको प्रकाशकरे सबकोबीजकहावेजितनी कछु लोकरचना या संसारमेंहैसो सबकोबनावनहारऐसोकोनहै इत्यादिक वेदांतशास्त्रके प्रश्न अनेक वा राक्षसी ने कीन्हे संस्कृत योगबाशिष्ठमें बिस्तार देखि लीजो हम कहांताईं लिखें फिर वहराक्षसी कहन लगी अरे राजा अरमंत्री येये बातें मैंने तुमसों पूछीहैं इनको एकओरते उत्तरदेउगे तो आज बचोगे नहींतो मेरोभोजनबनोगे बिकटनाद हूंकरतभई इतनोकहि वहराक्षसी चुप होयगई॥

इतिमहारामायणेयोगबाशिष्ठसूची उपाख्यानेराक्षसी प्रश्नसर्गः ७८। १२॥

बशिष्ठजीरामसों कहैहैं अहोराम वा बड़ीअँधेरी रात्रि में वा जंगलके बीच वा राक्षसीने इतनी जबबातकही तब मंत्रीबोलो सुनिरीराक्षसी अपनेप्रश्न को उत्तरक्रम

सों मैंकहूहूं तैंने जे प्रश्नकीन्हे तिनके सबमिलके एकही यहउत्तरहै जो परमात्मा परब्रह्महीको तैंने कहो जोब्रह्म ब्रह्म ऐसोहीहै जो ब्रह्मकहने में नहीं आवे मनसों जप करा जाय चैतन्यरूप एकहै नहनेतेनहनो आकाशसरी-खो ता ब्रह्मकेबीच सब यह जगत् छोटोबड़ो रहेहै ऐसे जगत्कीसत्ता और असत्ता वाही ते भईहै अनुभवमेंही केवल आवे है योगिनको वाहीकीसत्ता सों जगत् सांचो सो दिखाई देहै आंख नाक कान ते सबइंद्रिय हैं तिनको गोचरवहनहीं सर्बब्यापकवहहैतासों सबभोगेहै चैतन्य सूक्ष्म अलक्षित सब इंद्रियन सों बाहर है काहूतरे वह ब्रह्म भूठो नहींबने है वही जगत् को उपजावे है वापाले संहारकरे है वा ब्रह्मसमुद्रमें यह सबजगत्डूबोहै दिखाई नहींदेहै याते नाहनोहै वह ब्रह्मज्ञान में आवे ताते अ-शून्यहूनहीं कहावेहै मैंहूं यह बुद्धि तू है यहबुद्धि द्वैतकी बुद्धिसोंभासेहै आप अपनेपैकोजानेहै महाशरीरहै बड़ेमें बड़ोछोटेमें छोटो चैतन्यरूपमें सब जगत् समायं रहोहै सबजगह वह ब्यापकहोयरहोहै जैसेआकाश के गमना-गमनहोहै तैसेही वा ब्रह्मकीसत्ता है चेतनजड़ सबजगत् वाहीको बनायोहै पत्थरमें वाहीकीसत्ताहै जीवनमें वाही की सत्ताहै महाव्योमके बीच चैतन्यरूप वहीहै विचित्र जगत् की रचना वाहीकी कीन्हीहै अग्निमें सत्तावाहीकी है जलमें थलमें सूर्यमें वही व्यापक है वह ब्रह्म प्रकाश रूपहै दृष्टिगोचरनहीं अनुभवमेंहीं आवेहै हृदयघर को प्रकाशक दीपके सब इन्द्रियन को प्रकाश करन वारो है सबपदार्थनको अदर्शन दर्शनवहीकरेहैलता गुल्म अंकुर

वृक्ष इनको सूक्ष्म बीज वही है वही ब्रह्मकाल आकाश की क्रिया सत्ता स्वभावनको करनवारो है सब को वही स्वामी कर्त्ता पिता माता भोक्ता है जगत् रत्नको उपजावनहारो सूक्ष्मवहीहै प्रमाणको करनवारो प्रमाण बिषय वही है वहीब्रह्म सब जगत् में फूलरहो है वहही जगत् समुद्रमें रत्नसरीखोहै पर्बतरूप वहीसरसोंके दाने बरोबर वही है यह सब जगत् वाहीकीसत्ताहै वहीसत्यहै सुमेरु सरसोंसरीखो वहीहै कालरूपवही क्षण पल घड़ी पहर दिन पक्ष मास ऋतु वर्ष युगादिकरूपवहीहै सत्यअसत्य दृष्टांत स्वप्न दुःख कालसुखरूपवही है हलुको भारी जोपदार्थ सो सबवाहीको रूपहै दुःखमेंथोरोसोकहूं समयबड़ोहै यहै सुख मेंबहुतसोहूं समयथोरोसो कहोहै यहबात हरिश्चंद्रराजा कोभई जो दुःखमेंवाको एकरातबारहबर्षकी बरोबरबीती कार्यकारणरूपवहीहै जैसे एकहीसोनो अनेकगहना रूप हो है तैसेही यहब्रह्महै और अनेकशास्त्रकी रीतिसों वाकी सत्ता अनेकरूपहै एकरूपभीहै कहांताई मैं वर्णनकरों तेरे सबप्रश्नन को यहीउत्तरबनैहै यहजानि कहांताई कहैं ॥

इतिमहारामायणेयोगवाशिष्ठेसूचीप्रकरणे
राक्षसीप्रश्नोत्तरसर्गः ७९ । १३ ॥

वशिष्ठजी कहैहैं अहोराम ऐसेजब वा मंत्री ने राक्षसी कोउत्तरदियो तबवहराक्षसी फिरबोली अहोमंत्री शाबास धन्यहै तूदेखो तैंनेकहा सुंदरपवित्र परमार्थ की बातकहीहै भलेतैंनेतोकही अबयह राजाबोलो कहोयाराजाकी हूं वाणीमैं सुनूं वशिष्ठ कहै हैं ऐसे जब वहराक्षसी कहन लगी तबराजाहू वचनबोलतभयो कहा कि जैसेजैसे पर-

मार्थ ब्रह्मको बिचार मंत्रीनेकहो तैसेहीशारीरक संबंधा-
नुसार सों ब्रह्मकीसत्ता एकअनेकरूप उपाधि सूं दीखेहैं
तासूंब्रह्महीएकसत्यहैं और सबमिथ्याहै ऐसेअनेकतरह
की बात राजाहूकहतभये और यह कहत भयो कि द्वैत
भावना जो यहदिखाईदेतहै सो सबझूठी है ऐसेजब रा-
जानेभी अनेकशास्त्रन की बोलीकही तबतो वह राक्षसी
बहुतप्रसन्न भई कहनलगी अहो ये दोनों बड़ेगुणी हैं ये
मारे न चाहिये ऐसे वह राक्षसी मनमें बिचारकरि फिर
सबकोसुनावत पुकारके कहतभई अहोमंत्री अहोराजा
तुम दोनोंजने भलीसुंदर बातकही सत्यकही कि जो पर-
मात्मा ब्रह्मसूक्ष्मते सूक्ष्महै एकहै सर्वस्वरूपभीहै आका-
शरूपहै बृक्षादिकनमें बीजरूपहै बटकेबीज में जैसे बि-
चारकीजिये तोसंपूर्ण वहबृक्ष वा बीजमें समायरहोहैनहीं
तो वहहोतो कहां ते ऐसेही यहब्रह्महै यहज्ञानमोको तो
पहिलेही कछूभयोहो अब तुम्हारीबोली बचनसुनकेबड़ो
दृढ़ पक्कोज्ञान मोकोभयो मैं यहज्ञान जबताईं पायो नहीं
तबपहिले अनेकजीवनकी हिंसाकरतरही अब तो मैंने
ज्ञानपायो सबहत्याकरनी छोड़ी राजातूहू मेरोबड़ो प्या-
रोभयो मैं तोपै प्रसन्नहूं जाकाहूको ऐसोज्ञानहोयवाको मैं
कबहूं दुःख न देऊंगी तूतो राजा महाज्ञानीहै तो यहीबि-
शूचिका को मंत्र सिद्धहै तो सरीखे धीरपुरुषनको कछू
कठिन नहीं तथापि शरीर संबंधसों जो कछू नाड़िन में
शूलनकी बाधाहोय वाकीशांतिकेलिये जोयहब्रह्मानेमंत्र
कह्योहै सो राजातुम मेरेपासतेसुनल्यो मैं दोनोंको बता-
ऊंहूं महाउपदेश करोहूं आवोमेरे पास मैं उपदेशकरूं॥
इतिमहारामायणेयोगवाशिष्ठेसर्गः ८० । १४ ॥

यों वशिष्ठ कहे हैं अहो रामराजा वह मंत्री दोऊ यह राक्षसीको बचन सुनिके बहुतप्रसन्नभये और हाथ पांव धोय आचमन करि वां राक्षसी के पास आयबैठे कहन लगे बताव तब राक्षसी मंत्रोपदेश उनको करदेत भई नदीके किनारेजाय सबेरेकेपहर वा राक्षसीने महाब्रह्मोपदेश राजामंत्रिनकोकियो वहपहिले जोहमकहोहै सोही मंत्र औरवह विशूचिकानेभी बतायदीनो तबवेदोऊ कृतार्थ होगये तब राक्षसी उनको बिदाकरि आपहू चलनलगी तबहीं राजा वासों कछु कहतभयो कहा कि अरी देवी तू हमारी गुरूहै तासोंहम तेरी बिनती करैहैं जो तू हमपै कृपाकरु स्नेहसौहार्द करु अपनो यह भयानक स्वरूप छिपायकर सुंदर स्वरूप बनाय हमारे घरचलु कछुकदिन वहांरहो बड़े आनंदसों हम तुम्हारे सेवक सेवा करेंगे वशिष्ठ कहे हैं अहोराम राक्षसी यह राजाकी बातसुनि फिर बोली राजा ठीक तुमने कही यह ऐसेही है मेरेराक्षसरूपको बड़ोभोजन बिस्तार तुम पै निबाहो न जाय सुंदर छोटीसी स्त्रीको निर्बाह बने यह सत्यहै तासोंमें तुम्हारेघर कैसे चलों मेरो स्वभाव राक्षसीको कैसे छूटे तब यहसुनि राजाबोलो अहोदेवि तुम बहुतसुंदर मानुषीस्त्रीको रूप बनाय सुंदर गहना कपड़ा पहिर मेरे घरमें आनंदसों कछुक दिन रहो हम तुम्हारीसेवा अच्छीकरेंगे भोजनकी तो चिंता मतिही करो जो मेरेराज्यमें छोटे बड़े चोर पापी अधर्मी बधके लायक मनुष्य होयँगे तिनहिं पकड़ बांधिले आयके तेरे पास डारेंगे उनको भोजनकर बड़े आनंदसों मेरे घर

बिराजो भोजन करती बिरियां अपनो राक्षसी शरीर करियो एकांतमें बैठ भोजनकरि पीछेफिर सुंदरस्त्री बनि बैठियो भोजन हिमाचलके शिखरमें एकांत में कीजियो आनंदसों सोइयो जब जागे क्षुधालगे तब मेरे पासते भोजन लेजाकरियो और जबतब मोसों मिलाप करि जायो फिरिदर्शनअपनेदेतरह्यो बहुभोजनी बहुनिद्रावाननको एकांतही बास योग्यही है राक्षसी यह राजाको बचन सुनिके फिरबोली राजातुमने अच्छीही बातकही मेरेभलेकी ऐसीबात कौनको अच्छी न लगे अच्छोमैंचलूहूं तुम्हारेघरवशिष्ठरामजीसोंकहैहैं अहोराम वहराक्षसी इतनोकहिके अपनीमायाकेबलसूं बहुतसुंदर एकस्त्री बनी सुंदर अनेकगहना हार बिजायठे बाजूबन्द कड़ा इनको आदिलेकरि जाकेशरीरमें सोहैहै और सुंदरकपड़ा पहिरकरि राजाके और मंत्रीकेआगे चलबेकीतयारी करि कहनलगी अहोराजा अहोमंत्रीचलिये मैं तुम्हारे संगहूँ इतनोकहि वह राक्षसी राजा औ मंत्रीनको बिदा करि अपना रातिमेंहीचलीचली राजाकेघरमेंआई वहां बैठकरि अनेक बातेंकरति रातिबीती सबेरेकी बिरियां महलनमें वहराक्षसीगई राजा और मंत्री अपनीकचहरी मेंआये राज्यकाजके धंधेकरतभये इतनेमें छैदिनबीतेतामेंराजाने अनेकपापी अधर्मीपकड़ इकट्ठेकीने तीनहज़ार गिनती मेंते सब वा राक्षसीके खायबेको आगेधरे वहराक्षसी जबरातिभई तबअपनो वहीभयानक कारोराक्षसी रूपकरि उन अपराधीःपापिष्ट मनुष्यन के तीनोंहज़ार के ढेरकी गांठिबांधि हाथमें लेकरि राजा सों पूंछ करि

हिमाचलके इक्कीसवें शिखरमें जायबैठी जैसे दरिद्रीकहूं सूंमिलो सोनो वाकी गांठि बांधले घरमें आयबैठे फिर वहराक्षसी वहां पेटभरिकै भोजनकीनी दोयदिन राति सुखसोई और फिर जागके प्राणायामकरत योगाभ्यास साधनलगी प्राण ब्रह्मरंध्रमें चढ़ायदीने ऐसे पांचबर्ष की समाधिकीनी पीछे छठे बर्ष समाधि सों उठि वाही राजाके पासआई राजा ने पूजाकीन बहुत वासूं मीठी मीठी बातैं कीनी कछुक दिनरही इतने में वा.राजाने अपराधीपुरुष कछुइकट्ठेकिये तिन्हें लेकरि वाहीं पर्ब्बत के शिखर में फिर आय बैठी ऐसे हमेशह वह राक्षसी वहां बास करतभई रामजी यह तुम निःसंदेह जानो॥

इतिमहारामायणेयोगवाशिष्ठेसूच्युपाख्यानेसर्गः ८१। १५॥

वशिष्ठजीरामजीकेआगेकहैहैं अहोराम जबवहराक्षसी वा किरात भीलनकेराज्यमें रहनलगी तबवहांके जितने राजाहैं तिनसों याकीबड़ीमैत्री प्यार बँधिगयो येहूवाको भलोकरे हैं वह राक्षसीभी उनके राज्यमें उत्पात बाधा पिशाच भूत भयरोगदोष उपद्रवनकोअपने योगबलसों शांतकरदेत सबनको आनंददेतभई अपनो वही नियम बांधतभई जो वा पर्वत के शिखरमेंरहे हमेशाध्यानकरो करे जब भूंखलगे तब राजाकेपास आय अपनो भोजन लेजाय सुखसोंजाय बैठनलगी ऐसेअहोराम वहराक्षसी वा देश में अबताईं है अबहूं वहांको राजा वैसेहीमारबे लायकनको पकर वा देवी के स्थानपै बलिदानकरतहै वह देवी उसजगह कंदरादेवी मंगलादेवीनामसों बिख्यात होयरही है वा राजाने एकसुंदर मंदिर बनवाय वाही

पर्वतकी तरहटीमें प्रतिष्ठा करदेतभयो वहांके सबप्राणी वाकीपूजा मानता करतभये नित्यनित्य बड़ो बिभवबढ़ो वाकीप्रतिमावहां अबतांई बिराजमानहै सबनकेमनोरथ· वा प्रतिमाद्वारा वहराक्षसी पूर्णकरेहै अहो रामजी ऐसी वहसूची सबलोकनको मंगलकीदेवनवारी अनेकपापी जननको भोजन करनवारी भीलवाड़े के सब लोकनको आनंद ज्ञानदेत वह राक्षसी परमदेवतारूपसों बिराज· मानहोइरही है आजकी घड़ीताई जो वाकी आराधना करे वाके मनोरथ पूर्णकरे है वशिष्ठ रामजीसों कहै हैं अहोराम यह सूचीको उपाख्यान हमने सम्पूर्ण तुमको सुनायो है याको जो पढ़ेगो देखेगो वाको बिशूचिकाकी पीड़ा कबहूं न होयगी ॥

इतिमहारामायणेयोगवाशिष्ठेसूच्युपाख्यानेसर्गः ८२ । १६ ॥

संवन्नंदरसाष्टभूमिगणितेकृष्णेसहःपक्षके द्वादश्यांशशिवारयोगिनतिथौ भाषानिबंधोऽगमत् । संपूर्त्तिकिलकृष्णावल्लभसुधीलेखीकृतप्रेरणा द्राजश्रीजितराजराजपटिनीमल्लार्यवर्य्यस्वसन् ॥

इति ॥

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
जुलाई सन् १८९३ ई० ॥

१ जुज़ ० वर्क़